निष्कर्ष :-

झारखंड के पर्व त्योहारों में मंडा पर्व की एक अलग ही पहचान है। इस पर्व में सभी तरह के भेदभाव मिट जाते हैं। इंसान सिर्फ शिव भक्ति में लीन हो जाते हैं। आदिदेव महादेव सभी लोगों का इष्ट देव हो जाते हैं। मंडा पर्व झारखंडी एकता समरसता का सूचक है। प्रेम उत्सव उमंग उल्लास से मानव मन भर जाता है। इसी तरह मानव समाज में आपसी प्रेम सदा बनाए रखने के लिए जीवन में इस तरह का पर्व त्यौहार होना आवश्यक है।

****

संदर्भ:-

1. कृष्ण, संजय : झारखंड के पर्व त्यौहार मेले और पर्यटन स्थल, पृष्ठ संख्या 195, प्रभात प्रकाशन दिल्ली। वर्ष -2017.
2. गौंझ , डॉ०. गिरधारी राम : झारखंड के लोक संगीत, पृष्ठ संख्या 159, झारखंड झरोखा रांची।वर्ष-2015.
3. गौंझ, डॉ० गिरधारी राम : ऋतु के रंग मांदर के संग, पृष्ठ संख्या 71/72 , प्रिय साहित्य सदन दिल्ली।वर्दिल्ली।वर्ष-2018.
4. गौंझ ,डॉ० गिरधारी राम : ऋतु के रंग मांदर के संग, पृष्ठ संख्या 69/70, प्रिय साहित्य सदन दिल्ली।वर्ष-2018.
5. निधि, डॉ विद्योतमा : नागपुरी लोकगीत नृत्य एवं वाद्य, पृष्ठ संख्या 216, पृथ्वी प्रकाशन दिल्ली।,वर्ष -2020.
6. उपर्युक्त , पृष्ठ संख्या 216.
7. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 217.

सेक्स, जेंडर एवं लैंगिकता के आधार पर क्वीर का एक संक्षिप्त अध्ययन

सलीजा ए पी
सहायक प्राध्यापक –हिंदी
शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय कोझीकोड- केरल

क्वीर एक अवारित शब्द (umbrella word) है, जो ऐसे व्यक्तियों का वर्णन करता है जो विषमलैंगिक नहीं हैं, और जिनके जेंडर समाज के कायदे के अनुकूल नहीं है । 'क्वीर' शब्द ने LGBTQIA+ व्यक्तियों के लिए एक सामान्य और सामाजिक रूप से स्वीकार्य तरीके के रूप में अपने और अपने समुदाय को संदर्भित किया है।

हर कोई, अपने आप को 'लिंग' (sex) के ज़रिये ही परिभाषित करता हैं, लेकिन यह परिभाषा आम तौर पर समाज द्वारा पूर्व निर्धारकों से होती है। समाज ने कायदे-कानून बना रखे है कि कोई विशिष्ट लिंग में जन्मे हो तो विशिष्ट रूप से पेश आना चाहिए, तुम्हारा मन जो भी कहे वह महत्व नहीं रखता। असल में जेंडर हमारा लिंग (जननांग) के आधार पर नहीं है, वह हमारी सोच के आधार पर है। दिमाग जो कहता है, वही हमारा जेंडर है 1 हम जिस ओर आकर्षित होते है वह ही हमारी लैंगिकता है। इसका मतलब यही है कि सेक्स व लिंग जन्म से मनुष्य के साथ है (लेकिन उसकी पहचान बाद में अलग हो सकता है) I ऐसा भी हो सकता है कि किसी को जन्म के अवसर पर लिंग ही ना हो, और जो है वह सिर्फ नाम मात्र हो या जो है उसका उसके मन और दिमाग से कोई सम्बन्ध नहीं रखता हो। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति, पुरुष का जननांग लेकर जन्म लेता है तो उसका सेक्स पुरुष का हुआ, लेकिन इस से यह निर्धारित नहीं किया जाता कि उसका जेंडर पुरुष का है, उसका जेंडर स्त्री का भी हो सकता है, वैसे ही जेंडर स्त्री का होने से यह भी पक्का नहीं कि उसका लैंगिक आकर्षण पुरुष से हो, वह स्त्री से भी हो सकता है, या दोनों से भी हो सकता है, उसी तरह विपरीत रूप में भी। समझने में कठिनाई है मगर यही सच्चाई है।

क्वीर का अपना एक स्वत्व है। विशेष अधिकार व सुविधा (प्रिविलेज) के साथ जीने वाले लोग, जिस समाज का निर्माण करते हैं, उस समाज में कुछ लोगों को जानबूझकर बाहर रखते है। सामान्यतः लैंगिक अल्पसंख्यकों को LGBTQIA+ के नाम से पहचाना जाता है और क्वीर शब्द को अवारित या छाता शब्द के रूप में इस्तेमाल करते हैं। क्वीर शब्द के अंतर्गत वे सभी लोग आते हैं जो विषम लैंगिक (Hetro Sexual) व सिस जेंडर नहीं है, अर्थात जिसकी जेंडर स्त्री व पुरुष का नहीं है या जिसकी लैंगिकता समाज के कायदे के अनुकूल नहीं है, जिसको समाज विचित्र कहता आया है, और उनको उसी अर्थ में 'क्वीर' नाम प्राप्त हुआ। दरअसल, क्वीर के अंतर्गत सिर्फ ट्रांसजेंडर या समलैंगिक ही नहीं है बल्कि इसमें कई तरह की विभिन्नताओं के साथ, अनेक विभाग है। जेंडर और लैंगिकता में शारीरिक व मानसिक रूप से अलगाव रखने वाले सभी इस विभाग में आते हैं।

एक समलैंगिक व्यक्ति को प्रेम करने का और एक अलैंगिक व्यक्ति को प्रेम न करने का पूर्ण अधिकार है, उस अधिकार के लिए क्वीर समाज एक कंठ से आग्रह करता है 1 यह भी क्वीर सिद्धांत का मुख्य दायित्व है। क्वीर और उसके अर्थ को बेहतरीन तरीके से समझने के लिए पहले **लिंग, जेंडर और लैंगिकता** नामक तीन शब्दों

को गहराई से समझना और उनके अंतर को जानना अनिवार्य होजाता है ।

1.3. लिंग (sex), जेंडर और लैंगिकता (sexuallty)

इस अंश का उद्देश्य लिंग, जेंडर और लैंगिकता **(sexuality)** को परिभाषित करना और इन के अंतर को समझाना है । ये तीनों ही शब्द उपयोग में लाने की गलती में यथार्थ अर्थ से हटकर दूसरे अर्थों में या गलत अर्थो में प्रयुक्त किया जा रहा है, और उन्हीं अर्थो में इन शब्दों की पहचान होने लगी है ।

जैविक रूप से हमारी पहचान, सेक्स व लिंग के द्वारा की जाती है, अर्थात जननांगों के आधार पर यह समझना कि हम स्त्री, पुरुष या उभय लिंगी है । जेंडर, सामाजिक रूप से हमारी पहचान है, जिसके लिए सामाजिक व्यवहार साथ देता है और यह हमारे दिमाग और हमारी भावनाओं पर केंद्रित है ।

Sexuality या लैंगिकता दूसरों से हमारे लैंगिक रुझान या यौन आकर्षण से पता चलता है, इसी के आधार पर समझा जाता है कि किस को, किस विभाग के प्रति लैंगिक आकर्षण है ।

1968 में मनोवैज्ञानिक रोबर्ट **जे.** स्टोलर **(Robert J. Stoller)** ने अपने शोध परियोजना कार्य के दौरान **85** मरीजों का अध्ययन किया । इस अध्ययन का केंद्र बिंदु सेक्स और जेंडर के बीच के अंतर को जानना व जेंडर पहचान की समस्या पर बात करना था । स्टोलर **'Sex and Gender: The Development of Masculinity and Femininity'** अपनी पुस्तक में सेक्स और जेंडर के बीच के अंतर पर बात करता है । स्टोलर ने 'जेंडर का अर्थ प्रकृति से न मानकर मनोवैज्ञानिक व सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ कर देखा और कहा कि सेक्स का संबंध स्त्री और पुरुष से है तो जेंडर का संबंध स्त्रीत्व व पुरुषत्व से है । ये दोनों ही शब्द लिंग की प्राकृतिक (नैसर्गिक) संरचना से स्वतंत्र अर्थ ग्रहण करते हैं ।' जेंडर और कामुकता के संबंध में वह लिखता है- 'लैंगिकता की सीख उन्हीं अवधारणाओं से होती है जो एक इन्सान को प्रसवोत्तर मुख्य और सांस्कृतिक रूप से सिखाया जाता है' । रोबर्ट स्टोलर का यह अब तक का पहला स्वतंत्र अध्ययन था, जिसमें लिंग और जेंडर को अलग-अलग रूपों में सामने लाया गया ।

1.3.1.लिंग (sex)

लिंग में महिलाओं और पुरुषों की जैविक विशेषताएं शामिल हैं । यह मानव और जानवरों में जैविक विशेषताओं को संदर्भित करता है या शारीरिक विशेषताओं के साथ जुड़ा हुआ है जिसमें क्रोमोसोम, जीन, अभिव्यक्ति का स्तर, प्रजनन और यौन शरीर रचना शामिल हैं । सेक्स को सामान्यतः महिला या पुरुष के रूप में वर्गीकृत किया जाता था । 'Sex' या 'लिंग' का अर्थ जन्म के वक़्त निर्धारित करने वाला मनुष्यों का शारीरिक विभाजन है, जैसे पुरुष, स्त्री, इंटर-सेक्स, ऐसा कहने पर ही ये विभाजन कुछ हद तक पूर्ण हो जाता है । जन्म के अवसर पर निर्धारित किया जाने वाला लिंग, कभी-कभी स्व:पहचान से भिन्न हो सकता है ।

1.3.2. जेंडर

जेंडर आइडेंटिटी या जेंडर पहचान का मतलब व्यक्ति की आंतरिक भावना पुरुष हैं या महिला या फिर दोनों का मिश्रित रूप है । एक व्यक्ति के लिंग की पहचान दिमाग में है, जो बाहर दिखाई देता है, वह नहीं है । एक व्यक्ति के लिए जेंडर की पहचान सिर्फ उसकी अपनी है, अपनी सोच है जिस पर दूसरों की पहुँच नहीं है ।

जेंडर से मतलब है कि कैसे एक व्यक्ति बाहरी रूप से अपना लिंग पहचान व जेंडर आइडेंटिटी दर्शाता है, इसमें फिजिकल एक्सप्रेशन शामिल हैं । जैसे कि व्यक्ति के कपड़ों के स्टाइल, मेकअप और सामाजिक अभिव्यंजना जैसे नाम और सर्वनाम को चुनना । जेंडर के कुछ ऐसे उदाहरण है - स्त्रीत्व, पुरुषत्व और उभय लिंग ।

सामाजिक संदर्भों में जब हम जेंडर की बात करते हैं तो इसका पहला प्रयोग लिंग **(Sex)** और लिंग की भूमिका **(Sex Role)** के अंतर को स्पष्ट करने के दौरान सामने आता है, जहाँ स्त्री और पुरुष का जैविक आधार पर विभाजन न होकर समाज द्वारा तय मानदंडों पर विभाजित होता है ।

पूर्ववर्ती काल से लेकर अब तक का जेंडर सम्बन्धी सारा अध्ययन स्त्री और पुरुष को ही सामने रखकर किया गया, और यह भी बताया गया कि जन्म से जो लिंग है उसी के आधार पर जेंडर की पहचान होती है, होना चाहिए । असल में जेंडर की पहचान शरीर के किसी अंग से नहीं बल्कि दिमाग से होनी चाहिए ।

लैंगिकता (Sexuality)

लैंगिकता को एक इंसान के शरीर एवं इच्छाओं के साथ जोड़ते हुए समझा जाना चाहिए । लैंगिकता को स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक और सार्वभौमिक अनुभवों के रूप में नहीं समझा जाना चाहिए, जिनका गठन सामाजिक और राजनीतिक बल द्वारा हुआ है । यह वर्ग जाति और नस्ल से, खासकर जेंडर आस पास सत्ता के संबंधों से जुड़ा हुआ है । लैंगिकता की सांस्कृतिक समझौता स्त्रीत्व व पुरुषत्व के सामान्य आशयों पर गढ़ा गया है और वह पुरुष और स्त्री के लिए समाज द्वारा पूर्व निर्धारित होती है ।

रूमानी आकर्षण और लैंगिक बर्ताव के आधार पर लैंगिकता की पहचान होती है । लैंगिकता के आधार में क्वीर का विभाजन बहुत ज्यादा है ।LGBTQIA+ में 'T'और 'I' को छोडकर ज़्यादातर विभाजन लैंगिकता के आधार पर है ।

सेक्स प्रकृति की देन है, जब कि जेंडर मनुष्य की उपज है । जेंडर में विचार और एहसास के अनुसार बदलाव आ सकता है । इस का मतलब सेक्स जननांगों पर निर्भर है । जेंडर हमारे विचारों पर आधारित है, इसलिए जेंडर में बदलाव आने पर सेक्स भी बदला जा सकता है । लैंगिकता सेक्स से अलग है, लैंगिकता एक बहुत व्यापक शब्द है और इसके कई घटक हैं।

हम सोगी **SOGIE (SexualOrientaion Gender Identity and expression)** के द्वारा हमारा लैंगिक एवं जेंडर पहचान कर सकते हैं । लैंगिक अभिविन्यास, सालिंग अभिव्यक्ति और सालिंग पहचान के आधार पर ही वह जेंडर व लैंगिकता के किस विभाग में है, यह समझा जाता है । उदाहरण के लिए एक महिला, जन्म के अवसर पर महिला का जननांग होने के कारण एक स्त्री बताई गई थी, उसकी सालिंग पहचान महीला के ही होने के कारण उसे हम 'सिस जेंडर' महिला कह सकती है । उसकी लैंगिक रुझान पुरुषों के प्रति है, इसलिए हम उसको विषम लैंगिक कह सकते है । वह पान्ट्स पहनना पसंद करती है तो यह उसकी जेंडर एक्सप्रेशन है । तो यह एक सिसजेंडर हेट्रो और सेक्सुअल महिला है, जो पैन्ट्स पहनना पसंद करती है । यही सब मिलकर उसका अपना **SOGIE** है ।

LGBTQIA+वह संक्षिप्त रूप है जो अक्सर ऐसे व्यक्तियों का वर्णन करता है जो विषमलैंगिक या सिस जेंडर के रूप में नहीं पहचाने जाते ।

LGBTQIAAP2S... इस तरह ये विभाजन आगे जाता है । इसके संक्षिप्त अक्षरों में 'L' लेस्बियन के लिए, 'G' 'गे' के लिए,'B' बईसेक्सुअलया उभयलिंगी के लिए, 'T' ट्रांसजेंडर के लिए प्रयुक्त किया जाता है । 'Q'के लिए दो अर्थ बताया जाता है । एक क्वीर के लिए,जो सामान्य रूप से एक अवारित शब्द के रूप में उपयुक्त किया जाता है । दूसरा अर्थ Q माने क्वेसटीयन व सवाल है जो एक विशेषव्यक्ति द्वारा अपने जेंडर और लैंगिकता पर उठाया जाता है 'I' इंटरसेक्स के लिए हैं । 'A' अक्षर आली (ally) के लिए है । जो

क्वीयर लोगों को मानसिक और प्रायोगिक रूप से समर्थन करता है, सहारा देता है उनको Ally कहते है। दूसरा'A'एसेक्सुअल के लिए जो किसी से भी लैंगिक रुझावनहीं रखता, उन लोगों में सिर्फ रुमानी रुझाव होता है। 'P' पनसेक्सुअल शब्द का संक्षेप है, जो blsexual शब्द से अर्थ व्यप्ति में अलग है, ऐसे एक व्यक्ति को किसी भी चीज से रुझाव हो सकता है। '2S' दो स्पिरिट या दो आत्माओं के लिए खड़ा है, जो व्यक्तित्व, लैंगिकता और जेंडर आइडेंटिटी में LGBTQIA+ में प्रतीक इस तथ्य को दर्शाता है कि कई यौन अभिविन्यास और लिंग पहचान हैं जो व्यापक LGBTQIA+ समुदाय का हिस्सा हैं I इन सब विभागों के लिए क्वीर एक अवारित शब्द है I

क्वीर एक सिद्धांत के रूप में सामाजिक रूप से स्थापित मानदंडों और द्वैतवादी श्रेणियों पर सवाल उठता है I क्वीर सिद्धांत के अंतर्गत, पुरुष वर्चस्व वाले समाज में स्त्री के साथ, सवर्ण द्वारा किया जाने वाले उत्पीड़नों में दलितों के साथ, बहुतायत की भयानकता भरे व्यवहार में अल्पसंख्यक के साथ, क्वीर फोबिक समाज में क्वीर मनुष्यों के साथ खड़े होना आता है, और इन सब के लिए क्वीर सिद्धांत आवाज़ उठाता है।

****

संदर्भ :-

I. www.Barker,M.John & Scheele,21-09-2019 Julia (2016) – Queer A Graphic History – UK, Icon Books Ltd.
II. www.researchgate.net -sexand gender : the Development and feminity - Robert Stoller
III. .पृष्ठ संख्या 29, Sara warner -Acts of Gaiety -The University of Michigon press -2012
IV. Jagose, A. (1997) – Queer Theory: An Introduction – Newyork, Newyork

Analysis of Production and Growth pattern of Lentil Pulse crops in the state of Madhya Pradesh

Jageshwar Prasad Prajapati
Assistant Professor Economics, Govt. Shyam Sundar Agrawal P.G. college Sihora, Jabalpur, M.P. 483225

Dr. Sunil Kumar Tripathi,
Assistant Professor Economics, Govt. Tilak P.G. College Katni, M.P.

Abstract- *Pulse crops are an important and essential part of Indian diet. Lentil pulse crop become more important due to its rich nutritive value. Lentil production reached an all-time high of 1.61 million tons (Mt) over an area of 1.55 million hectares (Mha), with a record productivity level of 1,034 kg/ha in the year 2017-18 in India. The crop was cultivated on 14 lakh hectares (Lha), with Madhya Pradesh leading in both area and production and ranked first in India, contributing 35% in each category during 2016-17 to 2020-21. To estimate the trend coefficient of area, production and yield of lentil pulse crop computed the annual compound growth rate in the state of Madhya Pradesh. The result revealed that the growth of this pulse crop was time constant during the present study.*

Key word- Pulse crop, Nutritive value, trend coefficient, growth in area, production and yield.

Introduction- Pulses are a vital food crop worldwide, known for their high protein content. In India, they play a crucial role not only in the diet but also in the economy, contributing significantly to exports and yielding substantial financial gains. As a major source of protein, pulses are integral to the Indian diet, complementing the carbohydrate-rich meals consumed by people across all demographics. India stands as the largest producer and consumer of pulses globally. With a protein content ranging from 20 to 25 percent by weight, pulses offer double the protein of wheat and triple that of rice. Globally, pulses are cultivated on approximately 93.18 million hectares (Mha), with a production of 89.82 million tons (Mt) and an average yield of 964 kg/ha. India, with over 28 Mha dedicated to pulse cultivation, is the world's leading producer, accounting for 31 percent of the global area and 28 percent of total production. (Annual Report, 2021-22)

The substantial and noticeable upward trends in pulse production during 2016-17, 2017-18, and 2020-21—reaching 23.13 Mt, 25.42 Mt, and 25.46 Mt, respectively—are remarkable success stories. Pulse